डायरी का एक पन्ना

कक्षा - दसवीं

विषय – हिंदी
पाठ : 2
पाठ का नाम : डायरी का एक पन्ना
PPT-2

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

पाठ की व्याख्या

26 जनवरी : आज का दिन तो अमर दिन है। आज के ही दिन सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था। और इस वर्ष भी उसकी पुनरावृत्ति थी जिसके लिए काफ़ी तैयारियाँ पहले से की गयी थीं। गत वर्ष अपना हिस्सा बहुत साधारण था। इस वर्ष जितना अपने दे सकते थे ,दिया था। केवल प्रचार में दो हज़ार रुपए खर्च किया गया था। सारे काम का भार अपने समझते थे अपने ऊपर है ,और इसी तरह जो कार्यकर्ता थे उनके घर जा -जाकर समझाया था।

शब्दार्थ -

अमर दिन - जिसे हमेशा याद रखा जायेगा
पुनरावृत्ति - फिर से आना
अपना/अपने - हम /हमारे /मेरा (लेखक द्वारा अपने लिए प्रयोग किए गए शब्द)
कार्यकर्ता – स्वयं सेवक

यहाँ लेखक 26 जनवरी 1931 के लिए की गई तैयारियों का वर्णन कर रहा है)

26 जनवरी : लेखक कहते हैं कि 26 जनवरी 1931 का दिन हमेशा याद रखा जाने वाला दिन है। 26 जनवरी 1930 के ही दिन पहली बार सारे हिंदुस्तान में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया था और 26 जनवरी 1931 को भी फिर से वही दोहराया जाना था ,जिसके लिए बहुत सी तैयारियाँ पहले से ही की जा चुकी थी। पिछले साल बंगाल या कलकत्ता की तैयारियाँ काफ़ी साधारण थी। इस साल वहाँ के निवासी जितना दे सकते थे उतना दिया था। सिर्फ़ इस दिन को मनाने के प्रचार में ही दो हज़ार रूपया खर्च हुए थे। बंगाल या कलकत्ता के निवासी सारे कामों के महत्त्व को समझते थे कि सारा काम उन्हें स्वयं ही करना है और यही बातें उन्होंने सारे स्वयं सेवियों को उनके घर - घर जा -जाकर बताई थी।

बड़े बाज़ार के प्रायः मकानों पर राष्ट्रीय झंडा फहरा रहा था और कई मकान तो ऐसे सज़ाएँ गए थे कि ऐसा मालूम होता था कि मानो स्वतंत्रता मिल गई हो। कलकत्ते के प्रत्येक भाग में ही झंडे लगाए गए थे। जिस रास्ते से मनुष्य जाते थे ,उसी रास्ते में उत्साह और नवीनता मालूम होती थी। लोगों का कहना था कि ऐसी सजावट पहले नहीं हुई।

सारजेंट - सेना का एक पद

लारियाँ - गाड़ियाँ
(यहाँ लेखक 26 जनवरी को होने वाले समारोह को रोकने के लिए पुलिस की तैयारियों का वर्ण कर रहा है)

पुलिस अपनी पूरी ताकत के साथ पूरे शहर में पहरे के लिए घूम -घूम कर प्रदर्शन कर रही थी। मोटर गाड़ियों में गोरखे और सेना के अध्यक्ष हर मोड़ पर मौजूद थे। न जाने कितनी गाड़ियाँ शहर भर में घूमाई जा रही थी। घुड़सवारों का भी प्रबंध किया गया था। ट्रैफ़िक पुलिस कही पर भी नहीं थी क्योंकि सभी पुलिस कर्मचारियों को शहर में पहरे के लिए घूमने का काम दिया गया था। बडे - बडे पार्कों और मैदानों को सवेरे से ही पुलिस ने घेर रखा था क्योंकि वहीं पर सभाएँ और समारोह होना था।

मोनूमेंट के नीचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी उस जगह को तो भोर में छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में घेर लिया था ,पर तब भी कई जगह तो भोर में ही झंडा फहराया गया। श्रद्धानन्द पार्क में बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा तो पुलिस ने उनको पकड़ लिया तथा और लोगों को मारा या हटा दिया। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा बाज़ार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने गए पर वे भीतर न जा सके। वहाँ पर काफी मारपीट हुई और दो - चार आदमियों के सर फट गए। गुजरती सेविका संघ की ओर से जुलूस निकला जिसमें बहुत सी लड़कियां थी उन्हें गिरफ्तार कर लिया।

मोनूमेंट - स्मारक
भोर - सुबह
जुलूस - जनसमूह या भीड़

(**यहाँ वर्णन है कि किस तरह से पुलिस लोगों को रोक रही थी**)

स्मारक के नीचे जहाँ शाम को सभा होने वाली थी उस जगह को तो सुबह के छः बजे से ही पुलिस ने बड़ी संख्या में आकर घेर कर रखा था ,इतना सब कुछ होने के बावजूद भी कई जगह पर तो सुबह ही लोगों ने झंडे फहरा दिए थे। श्रद्धानन्द पार्क में बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा तो पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया और अपने साथ ले गई ,इसके साथ ही वहां इकट्ठे लोगों को मारा और वहां से हटा दिया। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा बाजार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने गए परन्तु वे पार्क के अंदर ही ना जा सके। वहां पर भी काफी मारपीट हुई और दो - चार आदमियों के सर फट गए। गुजरती सेविका संघ की ओर से लोगों का एक समूह निकला ,जिसमें बहुत सी लड़कियाँ थी ,उनको गिरफ़्तार कर लिया गया।

11 बजे मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने अपने विद्यालय में झण्डोत्सव मनाया। जानकी देवी ,मदालसा (मदालसा बजाज -नारायण) आदि भी आ गई थी। लड़कियों को, उत्सव का क्या मतलब है ,समझाया गया। एक बार मोटर में बैठ कर सब तरफ घुमकर देखा तो बहुत अच्छा मालूम हो रहा था। जगह -जगह फ़ोटो उतर रहे थे। अपने भी फ़ोटो का काफी प्रबंध किया था। दो -तीन बजे कई आदमियों को पकड़ लिया गया। जिसमें मुख्य पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय थे।

झण्डोत्सव - झंडा फहराने का समारोह

11 बजे मारवाड़ी बालिका विद्यालय की छात्राओं ने अपने विद्यालय में झंडा फहराने का समारोह मनाया। वहाँ पर जानकी देवी ,मदालसा बजाज - नारायण आदि स्वयंसेवी भी आ गए थे। उन्होंने लड़कियों को समझाया कि उत्सव का क्या मतलब होता है । लेखक और उनके साथियों ने एक बार मोटर में बैठ कर सब तरफ घूमकर देखा तो बहुत अच्छा महसूस हो रहा था। जगह - जगह पर लोग फोटो खींच रहे थे। लेखक और उनके साथियों ने भी फोटो खिचवानें का पूरा प्रबंध किया हुआ था। दो - तीन बाजे पुलिस कई आदमियों को पकड़ कर ले गई।जिनमें मुख्य कार्यकर्ता पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय थे।

सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था पर वह प्रबंध कर चुका था। स्त्री समाज अपनी तैयारी में लगा था। जगह - जगह से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकलने की तथा ठीक स्थान पर पहुँचने की कोशिश कर रही थी। मोनुमेंट के पास जैसे प्रबंध भोर में था वैसे करीब एक बजे नहीं रहा। इससे लोगों को आशा होने लगी कि शायद पुलिस अपना रंग ना दिखलावे पर वह कब रुकने वाली थी। तीन बजे से ही मैदान में हजारों आदमियों की भीड़ होने लगी और लोग टोलियाँ बना -बनाकर मैदान में घूमने लगे। आज जो बात थी वह निराली थी।

शब्दार्थ -

टोलियाँ - समूह

निराली - अनोखी

सुभाष बाबू के ज़ुलूस की पूरी जिम्मेदारी पूर्णोदास पर थी (उन्हें पुलिस ने पकड़ लिया था)परन्तु वे पहले से ही अपना काम कर चुके थे। स्त्रियाँ अपनी तैयारियों में लगी हुई थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना ज़ुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचाने की कोशिश में लगी हुई थी। स्मारक के पास जैसा पुलिस का प्रबंध सुबह लग रहा था वैसा करीब एक बजे तक नहीं रहा। इससे लोगों को लग रहा था कि पुलिस अब ज्यादा कुछ नहीं करेगी परन्तु पुलिस पीछे कब हटने वाली थी। तीन बजे से ही मैदान में हज़ारों आदमियों की भीड़ इकट्ठी होने लगी थी और लोग समूहों में इधर -उधर घूमने लगे थे। आज की बात ही अनोखी थी।

जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था कि अमुक - अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। जो लोग काम करने वाले थे उन्हें इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी कि आप यदि सभा में भाग लेंगें तो दोषी समझे जाएंगे। इधर कौंसिल की ओर से नोटिस निकल गया था कि मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले कभी नहीं हुई थी।

कौंसिल - परिषद

गृहकार्य - पाठ को पढ़कर आना ।

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP